



HINDI A1 – HIGHER LEVEL – PAPER 1
HINDI A1 – NIVEAU SUPÉRIEUR – ÉPREUVE 1
HINDI A1 – NIVEL SUPERIOR – PRUEBA 1

Tuesday 3 May 2005 (morning)

Mardi 3 mai 2005 (matin)

Martes 3 de mayo de 2005 (mañana)

2 hours / 2 heures / 2 horas

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this examination paper until instructed to do so.
- Write a commentary on one passage only.

INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N'ouvrez pas cette épreuve avant d'y être autorisé(e).
- Rédigez un commentaire sur un seul des passages.

INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra esta prueba hasta que se lo autoricen.
- Escriba un comentario sobre un solo fragmento.

नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं, (क) तथा (ख)। इन दोनों में से किसी एक पर व्याख्या लिखिए।

1. (क)

तभी एक बार यह भटनागर जी के साथ आप लोगों के समारोह के समय यहाँ आया। कुछ दिन बाद इसने मुझे बताया कि भटनागर जी ने आपके संपादक जी से इसकी नौकरी के लिए कहा था और अब इसे चीफ-सब की पोस्ट के लिए इंटरव्यू पर बुलाया है। मैंने इसे यहाँ आने-जाने के लिए पैसे दिए। यहाँ से लौटकर इसने मुझे बताया कि नौकरी मिल गई है और मुझे जल्दी ही ड्यूटी पर जाना है। मेरे लिए यह खुशी की बात थी।

5 मगर इसी के साथ इसने मुझे एक बुरी खबर भी दी। इसने बताया कि संपादक जी ने इसे अपने एक प्रोफेसर दोस्त से मिलवाया था। उनकी एक लड़की है शादी के योग्य। मगर मैं तुम्हें दिलोजान से चाहता हूँ। अब उनसे बचने का एक ही रास्ता है कि यदि तुम राजी हो तो हम-तुम कोर्ट-मैरिज कर लें नहीं तो तुम अपने जीजा जैसे किसी रूखे आदमी के चाबियों के गुच्छे सँभालने के लिए स्वतंत्र हो और मैं उस प्रोफेसर की बेटी से शादी करने के लिए।

10 यह सुनते ही मेरी नारी-सुलभ ईर्ष्या, एकाधिकार की भावना जाग उठी और मैंने तुरंत हाँ भर दी। हमारे इस कदम से हमारे घरवाले बेहद नाराज हुए। हमें उनके कोप से बचने के लिए भटनागर जी के घर शरण लेनी पड़ी। भटनागर जी पहले तो खफा हुए। उन्होंने यही कहा कि हमने ठीक नहीं किया है। घरवालों से एक बार पूछ कर तो देखते, मगर फिर भी आश्रय तो दिया ही। उन्होंने ही मेरे अम्मा-बाबू जी को खबर दी। अम्मा तो यह सुनकर बेहोश ही हो गई। अलबत्ता बाबू जी भटनागर जी के यहाँ आए। बहुत बुरा-भला कहा

15 उन्होंने। भटनागर जी ने काफी समझाया मगर वे एक ही रट लगाए रहे कि आप विद्वान आदमी हैं। जो कह रहे हैं सो ठीक ही कह रहे होंगे। मगर मैं ये कैसे स्वीकार कर लूँ कि मेरी बिटिया कूएँ में नहीं कूदी जबकि मैं उसे कूएँ में पड़ा देख रहा हूँ।

बाबू जी भटनागर जी के काफी समझाने पर शांत हो गए। तब उन्होंने प्रस्ताव रखा कि बेटी को हमारे घर भेज दो, हम पहले कबीर को किसी व्यवसाय में डालेंगे, फिर कविता की शादी इसी के साथ गाजे-बाजे के साथ

20 कर देंगे ताकि समाज में हमारी इज्जत बनी रहे और हमारी बिटिया भी राजी-खुशी रहे।

मन में सोच रही थी कि जब घर जाऊंगी तो बोलूंगी कि “सच कह रही हूँ भैया, न जाने यह कदम कैसे उठा बैठी। मेरा तो बहुत मन किया कि बाबू जी की बात मान जाऊँ। सचमुच कितने लाड़-प्यार से पाला था उन्होंने मुझे। सब भाई-बहनों में मैं सबसे छोटी थी। बाबू जी, चाचा-चाची, भैया-भाभी सभी की तो लाइली थी मैं।” तभी कबीर ने मुझे समझाया कि यह सब इनकी चाल है। इसीलिए जब भटनागर जी ने कहा कि

25 इस बारे में वे कोई निर्णय न लेकर हम पर छोड़ते हैं तो मैंने स्पष्ट मना कर दिया।

दूसरे दिन मैं घर गई। अम्मा-बाबू जी का आशीरवाद लेकर यहाँ आने और उन्हें यह खुशखबरी सुनाने के लिए कि कबीर अब बेरोजगार नहीं है। मगर घर की हालत देखकर मेरी हिम्मत जवाब दे गई। अम्मा अब तक बेहोश थी। बाबू जी ने मुझ से बात तक नहीं की, भैया ने दुत्कार दिया और भाभी-चाची ने तो अपने कमरे के दरवाजे ही बन्द कर लिए। चाचा पहले ही दरवाजे पर जा डटे थे ताकि कबीर घर में कदम न रख

30 सके। उस दिन कोई अनहोनी होने से सिर्फ इस लिए टल गई क्योंकि घर में अम्मा बेहोश थी और बाहर पूरा मोहल्ला खड़ा था।

“प्रतिदान” वीरेन्द्र जैन 1993

1. (ख)

इसको भी अपनाता चल

इसको भी अपनाता चल
 उसको भी अपनाता चल
 राही हैं सब एक राह के, सब पर प्यार लुटाता चल !

व्यक्ति- व्यक्ति के बीच खाईयाँ लहू बिछा मैदानों में
 5 घूम रहा है युद्ध सड़क पर शांति छिपी शमशानों में
 जंजीरें कट गईं मगर आज़ाद नहीं इनसान हुआ
 दुनिया-भर की खुशी कैद है चाँदी जड़े मकानों में
 कोई किरन जगाता चल
 रूठे गीत मनाता चल
 10 चाँद नकाबों में न बन्द हो, हर घूँघट खिसकाता चल !

इधर कफ़न तक नहीं लाश पर, उधर नुमायश रेशम की
 यहाँ स्वयंवर करे चाँदनी, वहाँ न रात कटे गम की
 धरती कंकड़-पत्थर मारे, अम्बर बरसे अंगारे
 कोई पूछे बात न इस बगिया में दुखिया शबनम की
 15 सुख की उमर बड़ाता चल
 दुख की आयु घटाता चल
 मिले जहाँ भी महल उसे कूटियों के पास बुलाता चल !

रंग-बिरंगी दुनिया तो यह रेशम वाली साड़ी है !
 जनम से जिसका पल्लू-गोटा मरण की छोर किनारी है
 20 कोई पहने इसे प्यार से, कोई ओढ़े पछताकर
 चमक न इसकी घटी, गई ये लाखों बार उतारी है
 साड़ी यह धुलवाता चल
 पल-पल नई बनाता चल
 फिर भी रँग इस पर न चड़े तो अपना रक्त चढ़ाता चल !

‘फिर दीप जलेगा’ नीरज 1998